विस्थापनः– अर्थ इतिहास एवं स्वरूप (विशेषतः :– भारतीय संदर्भ में)

डॉ– जगजीत सिंह कविया
व्याख्याता – समाजशास्त्र
राजकीय लोहिया महाविद्यालय चूरू (राजस्थान)

विस्थापन एक ऐसी पर घटनाएं जो कि राजनीतिक सामाजिक प्रजातिय विभेद युद्ध आपदा ढांचागत विकास एवं विभाजन जैसे कारकों के चलते मानव इतिहास में आदिकाल से ही चलती आ रही है विस्थापन कार होता है अपने घर से उजाड़ दिया जाना और घर का अर्थ सिर्फ मिट्टी गारे की दीवार नहीं होती घर का तोता सुरक्षा का वह एहसास जो मैं जानवर से इंसान बनाता है घर का तोता अपने पूर्वजों की स्मृतियां जिनके साथ और जिनके स्नेह की छाया मेंहन जीवन व्यतीत करते हैं लेकिन विस्थापन दुनिया भर के लोगों से सुरक्षा का वह एहसास पूर्वजों की स्नेहिल छाया छीन ले गया पीडियो से रहकर आ रहे मिट्टी से उजड़ जाने से लोग उस वातावरण से बेघर हो जाते हैं जिसे उनकी बहुत सी स्मृतिया जुड़ी रहती है जो उन्हे जीवन से जुड़े होने का अपने अस्तित्व का एहसास कराता है ऐतिहासिक कालू से नए देशों की खोज में हुए देशांतर गमन और आर्थिक प्रगति के लिए किये गए प्रवजन और राजनीतिक संघर्षों से हुए पलायन विस्थापन के विविध पहलू है।

राजनीतिक संघर्षों के कारण ही नहीं राष्ट्रों के आर्थिक विकास के लिए प्रयुक्त आर्थिक उधार नीतियां व पूंजीवादी विकास के कारण भी दुनियाभर विस्थापन के पीड़ाजन्य प्रभाव दिखाई दे रहे हैं
सामान्य शब्दों में मूल से उखड़ कर इधर–उधर बिखर जाना ही विस्थापन है लोग जब अपने जन्म स्थान और निवास स्थान छोड़कर एक नए स्थान की तरफ गमन करते हैं उस प्रक्रिया को विस्थापन कहते हैं विस्थापन एक सीमा को पार करने का एकमात्र कार्य नहीं है बल्कि इसमें संबंधित व्यक्तियों के जीवन के समस्त पक्षों को प्रभावित करने वाली एक जीवन पर्यत्त प्रक्रिया है ।

विस्थापन मूल का एक व्यक्ति या समूह द्वारा जोखिमो और हितलाभो को तोलने के बाद कम उपयुक्त वातावरण से अधिक लाभदायक स्थान की ओर गमन करने का परिमेय निर्णय है वर्तमान संदर्भ में राजनीतिक अभियोग आंतरिक कलह विकास योजना परिस्थितिक पदावनति के कारण लोग विस्थापन करते

विस्थापन का ऐतिहासिक आख्यान :–

मानवीय जनसंख्या के ऐतिहासिक विस्थापन का आरंभ 10 लाख वर्ष पूर्व अफ्रीका से बाहर आकर होमोरक्टस् द्वारा यूरेशिया के आर पार किए गमनागमन से हुआ होमोसापियंस अफ्रीका का उपनिवेश इस करके ऑस्ट्रेलिया एशिया और यूरोप के आर पार फैल गये अमेरिका और प्रशांतदीप समूह के अधिकतम

भाग को भी उपनिवेशीत कर दिया गया पाषाण युग की क्रांति इंडो–यूरोपीय विस्तार और तुर्की विस्तार जैसे मध्यकाल के विशाल विस्थापन अन्य स्मरणीय विस्थापन कार्य हैं।

पूर्व आधुनिक समय सही अन्वेषण युग और यूरोपीय उपनिवेश ने विस्थापन के गति क्रम को अग्रसर कर दिया 19वीं सदी में 5 करोड़ से अधिक लोगों ने यूरोप से अमेरिका की ओर प्रस्थान किया अनैच्छिक दास व्यापार के कारण 18 वीं सदी से ही विस्थापन की गति शीघ्र हुई थी 19वीं सदी में औद्योगीकरण के कारण इस प्रस्थान में अधिक वृद्धि आई करोड़ों लोग गांवों को छोड़कर शहरों की ओर चले जिसके कारण अपूर्व ढंग से नगरीकरण के स्तर बढ़ गए यह घटना व्यापार 18वीं सदी में ब्रिटेन में प्रारंभ हुआ बाद में विश्व के चारों ओर फैल गए और आज अनेक प्रदेशों में प्रवृत्त हो रहा हैं।

20 वीं सदी में युद्ध और राजनीतिक कारणों से हुए विस्थापन में वृद्धि आई ऑटोमन साम्राज्य के ह्रास के समय तो रुको से बाल्कन की और स्थाई जनता ने प्रस्थान किया और उसी समय मुसलमान जनता बाल्कन से तुर्की की और गमन किया बीसवीं सदी से पूर्व में 4 लाख यहूदी लोगों ने फलस्तीन की तरफ प्रस्थान किया रूसी नागरिक युद्ध के बाद लगभग 3000000 रूसी जनता और जर्मन लोक सेवक संघ से विस्थापित हो गए द्वितीय विश्व युद्ध के बाद जयप्राप्त पश्चिमी मित्र राष्ट्र और सोवियत संघ के बीच सन् 1945 में हस्ताक्षरित पोस्टॉम संविदा के विधान ने मानवीय इतिहास में विस्थापन के नए जय जोड़े गए और यह निश्चय ही 20 सदी का विपुल विस्थापन है।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद उपनिवेशन का अंत हुआ जिसके फलस्वरूप बहुत से विश्व राष्ट्र विभाजित हो गए और अन्य एक नए राष्ट्र का जन्म हुआ राष्ट्रों के विभाजन ने मानव जाति के बाहरी विस्थापन को जन्म दिया विस्थापन से जुड़े पलायन में अनिश्चितता और कुंठा छिपी रहती है जिस से मुक्त होना सहज नहीं था इस तरह स्थापित हुए रास्तों में भारत जर्मनी कोसोवो पलस्तिन इसत्रायेल आदि शामिल है।

1950 के बाद बहुत से लोगों ने शिक्षा प्राप्ति के लिए राष्ट्रों के बीच प्रवचन शुरू कर दिए 1970 में तेल के कार्यक्षेत्र में आई अभी वृद्धि के कारण लोग खाड़ी देशों की और काम सेवाओं की तलाश में प्रवासित हुए 1990 सेल सूचना प्रौद्योगिकी में आई सहसा वृद्धि ने संपूर्ण विश्व की युवा पीढ़ी को संयुक्त राज्य की ओर आकर्षित किया अपने मूल स्थान में नौकरी के सुअवसर प्राप्त न होने के कारण ऐसे अवसर ढूंढने के लिए लोगों ने नए प्रदेशों में नए राष्ट्र की ओर प्रस्थान किया भौगोलिक विस्थापन को प्रोत्साहित करने में भूमंडलीकरण की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

प्रवासी भारतीयों का इतिहास :–

भारतीय संस्कृति का महा वटवृक्ष भारत भूमि में है लेकिन उसकी जड़ें विष्भुधारा में है वसुधैव कुटुंबकम दर्शन का जीवंत स्वरूप यदि देखना है तो प्रवासी भारतवंशियों के जीवनेतिहास में देखा जा सकता है।

भारत का विदेशों से संबंध का इतिहास बहुत पुराना है 18 वर्षों से धर्म प्रचार तथा व्यापार के लिए भारतीय विभिन्न देशों में जाते रहे हैं परंतु भारत में अंग्रेजों के शासन की स्थापना से इस दृश्य में परिवर्तन हुआ अंग्रेज डच फ्रेंच आदि विदेशी हजारों भारतीय मजदूरों को छल कपट से गिरमिटिया मजदूर बनाकर अपने अपने उपनिवेश से देशों में ले गए भारतीय मजदूर मॉरीशस फिजी सूरीनाम गुयाना ट्रिनिडाड आदि देशों में पहुंच गए।

भारतीय संदर्भ में विस्थापन का आख्यानः–

अंग्रेजी सप्ताह में सन 1757 के पानीपत की लड़ाई के बाद हिंदुस्तान की उन्नति के सभी साधनों को समाप्त कर भारत को शिक्षा संस्कृति कृषि व्यापार आदि सभी दृष्टीयों से पगु बना दिया सन 18 57 की क्रांति को अंग्रेजों ने भारतीय वीरों को तोपों से उड़ाकर दबाया बाद के क्रांतिकारियों को फांसी के तख्तो पर चढ़ा कर आंदोलन को शांत किया सत्याग्रहीयो को लाठियों से पीट–पीटकर जेल में बंद कर अमन–चौन रखने का प्रयास किया और अंत में जब स्थिति काबू में नहीं रही तो भारत माता के ह्रदय को दो टुकड़ों में विभक्त कर देश में खून की नदियां बहा दी।

विभाजन स्वतंत्रता का सबसे बड़ा अभिशाप बनकर उपस्थित हुआ जो लोग भारत की आजादी को एक मात्र सत्य अहिंसा तथा शांति से प्राप्त समझते हैं उन्हें अपने विचारों में परिवर्तन लाना होगा कि भारत की स्वतंत्रता रक्तहीन क्रांति से नहीं प्राप्त हुई है उसके मूल्य के रूप में राष्ट्र को जो महा रक्तदान करना पड़ा उसे कैसे भूलाया जा सकता है इस कुत्सित घटना के चक्र में सहस्त्र सहस्त्र निरपराधियों की निर्मम हत्या हुई लाखों विस्थापित हो गए इन घृणित कार्यों से मानवता के बहाल पर कलंक कि अमित रेखा तो अंकित हुई साथ ही आंतरिक अशांति की नीव सुदृढ़ हो गई।

भारत के इतिहास में विभाजन अभूतपूर्व घटना है इस विभाजन का कारण न तो कोई बाहरी आक्रमण था नगरा युद्ध में उत्पादन यह पूंजी या बाजार की आर्थिक विषमताओं और ना ही कोई प्राकृतिक प्रकोप या अस्थाई भौगोलिक अवरोध प्रत्येक रूप से यह विभाजन राजनीतिक नेताओं द्वारा संवैधानिक रूप से किया गया निर्णय था सैकड़ों साल तक चलने वाले बाहरी आक्रमणों धार्मिक संघर्षों जातियों विभेदो राजनीतिक विद्रोह सामाजिक विषमताओं और सारी प्राकृतिक आपदाओं के बीच भी देश का कोई विभाजन नहीं हुआ मुगल बादशाहों ने भी सत्ता के खूनी संघर्षों के बीच देश का विभाजन नहीं किया आर्थिक उत्पादन और विश्व बाजार की नई प्रक्रिया यूरोपीय ताकतों द्वारा शुरू हुई उसके आंतरिक संघर्षों के कारण

भी कोई विभाजन या विघटन नहीं हुआ अपने प्राचीन इतिहास मिश्रित परंपराओं और सीमाओं को अक्षुण्ण रखने वाला देश अंततः संग 1947 में दो हिस्सों में बांट दिया गया संवैधानिक तरीके से एक देश को तोड़कर उसके अंदर से ही उसके प्रतिद्वंदी देश को जन्म दिया गया।

दरअसल विभाजन एक मानवीय त्रासदी थी जिसने लाखों लोगों को भावना और विचारों के धरातल पर ही नहीं मनोवैज्ञानिक मानसिक और आत्मिक स्तरों पर भी प्रभावित किया उन्हें बेघर और विस्थापित कर दिया उनकी मूल्य चेतना को छिन्न–भिन्न कर दिया।

विभाजन राष्ट्रीय आंदोलन की अवांछित व विकृत परिणति थी उस संघर्ष करने कोई लक्ष्य था नहीं कोई दिशा दे श्वेता धीरे–धीरे उस तरफ चला गया जिधर उसे जाना ही नहीं था ऐसी स्वतंत्रता किसी के स्वपन में ही नहीं थी स्वतंत्र होने के नाम पर करोड़ों मनुष्य उन अधिकारों सुविधाओं और सपनों से भी वंचित हो गए जो स्वतंत्रता से पूर्व उन्हें गरिमा पूर्ण और विश्वसनीय तरीके से सहज उपलब्ध थे।

विस्थापन तथा शरणार्थियों और मुहाजिरों की समस्याएं :–

लोग मजबूरी में अपना वतन छोड़कर देश की अनजानी राहों में स्थापित होने के लिए बड़े जा रहे थे शरणार्थी देश और समाज के लिए समस्या बन गए इन्होंने राजनीति और सामाजिक व्यवस्था को झकझोर दिया संघर्ष ने शरणार्थियों के जीवन मान के साथ सामाजिक जीवन मान को भी बदला।

विभाजन से विस्थापित होने के लिए बाध्य स्त्रियां दहरात तनाव और शारीरिक शोषण से पीड़ित हुई बहुत दिनों तक परिवार से बिछड़ने के बाद वापस आई बहू बेटियों को परिवारों ने स्वीकारने से साफ इंकार कर दिया तो उनका अस्तित्व पूरी तरह मिट गया यह अपमान न सहपाने के कारण अनेक स्त्रियों ने आत्महत्या कर ली तो कुछ लोग आगे जीवित रहने के लिए घरेलू नौकरानी या वेशयाए बन गयी शरणार्थियों ने अपने बलबूते पर भारतीय समाज में अपना विशिष्ट स्थान बनाया और आज भारतीय अर्थव्यवस्था में शरणार्थी अति महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

आजादी के शुरुआती दिनों में भारतीय मुसलमानों ने के लिए पाकिस्तान सड़क से कम नहीं था लेकिन बहुत जल्दी उनका यह भ्रम टूट जाता है पाकिस्तान में से बहुत सारे भारतीय मुसलमान खदेड़ दिए जाते हैं या दूसरे दर्जे के नागरिक बना दिए जाते हैं पाकिस्तान रूपी जन्नत में अपने जीवन के सुख में सपने लेकर पहुंचे लोग समस्त साई से वाक्य हुए तो उनके सपने चकनाचूर हो गए कठिन परिश्रम के बाद उन्होंने अपने जीवन को पुनः स्थापित किया लेकिन सामाजिक व्यवस्था में भी हमेशा मुहाजिर बनने के लिए अभिशप्त थे स्थानीय लोगों के अत्याचारों को सहते हुए दम टूट गए तो मुहाजिर ने अपने लिए अलग राष्ट्र की प्राप्ति के लिए सिंधु देश आंदोलन शुरू कर दिया।

तमाम तरह के विघ्नों को पार कर विस्थापित और शरणार्थियों ने भारतीय समाज में अपनी जगह सुरक्षित बना ली जबकि पाकिस्तान ने मुहाजीरों को अभी भी पूरी तरह स्वीकार नहीं किया गया और स्थानीय लोगों से उनके हिंसक संघर्ष चलते रहते हैं।

विस्थापन के विविध स्वरूप :–

विस्थापन के रूपों में प्रमुख ही प्रवास या देशांतर गमन यानी एक देश से दूसरे देश में जाकर बसना यह विश्वव्यापी कार्यकलाप है जिसके पीछे सर्वथा आर्थिक कारण रहे हैं जीवन को अधिक सुख में बनाने के सपने देख कर लोग अपने घर परिवार देश और मिट्टी से अलग होकर एक अन्य देश और परिवेश में चले जाते हैं।

विश्व के लगभग 136 देशों में भारतवंशी निवास करते हैं और इनकी संख्या का अनुमान 2 करोड़ है हर तरह के लोग भारत से गए हैं जिनमें कुशल और अकुशल श्रमिक कारीगर औद्योगिक क्षेत्र में काम करने वाले डॉक्टर इंजीनियर कंप्यूटर विशेषज्ञ आदि शामिल है।

प्रवास के प्रकार :–

भारतीय संदर्भ आंतरिक विस्थापन की प्रक्रिया को स्थान के वर्गीकरण के आधार पर चार भागों में बांटा जा सकता है जो इस प्रकार है –

1. गांव से शहर
2. गांव से गांव
3. शहर से शहर
4. शहर से गांव

प्रशासनिक सीमा क्षेत्र के आधार पर आंतरिक प्रवास को 12 भागों में बांटा जा सकता है जिसे निम्नलिखित ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है भारतीय जनगणना की रिपोर्ट से में इन सभी प्रकार के प्रभावों के संबंध में अलग–अलग आंकड़े उपलब्ध है –

1. अंतरा जिला प्रवास

गांव से शहर

इ गांव से गांव

ब शहर से शहर

क शहर से गांव

2. अंतर जिला प्रवास

गांव से शहर

इ गांव से गांव

ब शहर से शहर

क शहर से गांव

3. अंतर राज्य प्रवास –

गांव से शहर

इ गांव से गांव

ब शहर से शहर

क शहर से गांव

विस्थापन के स्वरूप –

विस्थापन के मुख स्वरूपों में स्थाई या अस्थाई विस्थापन स्वैच्छिक या बलात विस्थापन और आंतरिक या अंतरराष्ट्रीय विस्थापन प्रमुख है एक राष्ट्र सीमा के अंदर लोगों का प्रस्थान आंतरिक विस्थापन है मानवीय अवस्थाओं में विस्थापन हमेशा एक अविभाज्य तत्व और यह एक निर्णय बदलने वाले दुनिया के नंबर ने प्रतिबंधित करता है विस्तार व्यापार एवं आर्थिक प्रणाम सेवाओं की तलाश प्राकृतिक संकट या जोखिमों को का खतरा अधिक सुरक्षा की उम्मीद है जो प्राकृतिक और आर्थिक और धार्मिक उत्पीड़न उत्पन्न होता है।

विस्थापन के इन प्रमुख प्रकारों के साथ–साथ ऐसे भी प्रकार से मिले जिन्हें विस्थापन के तहत आने वाले के तत्वों के विशद वर्णन हित है जैसे मौत से प्रस्थान ब्राह्मण या जनसंख्या के अगला बदली चक्रवर्ती विस्थापन है जो मजदूरों के प्रस्थान सैनिक सेवा के लिए और चना गांव खेतों की तलाश में किए गए स्थानांतरण में विस्थापन है विभिन्न राष्ट्रों के बीच मानव द्वारा होने वाले प्रस्थान कल आयोजित विस्थापन है इसी तरह ग्रामीण स्थानों से विकसित शहरों की ओर से हो रहे विस्थापन देहाती विस्थापन है।

विस्थापन एक देश से दूसरे देश में ही नहीं हो रहा लोग अपने देश में भी विस्थापित हो रहे हैं भारत के संदर्भ में सन 1984 – 2002 में हुए सिख तथा गुजरात दंगों में अनेक लोग अपने मूल स्थान से विस्थापित हो गए।

जम्मू कश्मीर गुजरात और उत्तर पूर्वी राज्यों में हुए संघर्षों के कारण कम से कम 6:30 लाख लोग आंतरिक विस्थापन के शिकार हुए इन विस्थापितों के में कश्मीरी पंडितों की संख्या अधिक थी जिन्होंने सन् 1989 से हो रही युद्ध नीति के कारण घाटी चूड़ी सन 1947 भारत और पाकिस्तान के निर्माण से ही कश्मीर की परिस्थिति विवाद का विषय रहा है आज भी यह विषय गंभीर तनाव को मामला है राजनीतिक ताकतों वेज उद्धृत के बीच होने वाले युद्ध मौलिक आंदोलनकारियों द्वारा कश्मीरी पंडितों की हत्या राजनीतिक

अस्थिरता से सृजित अराजकता और मौलिक मानव अधिकारों के लगातार उल्लंघन के कारण विशेष रूप से कश्मीरी पंडितों ने जम्मू से दिल्ली की ओर पलायन किया।

उत्तर पूर्व भारत के मौलिक रूप से अलगाव हुआ और आर्थिक रूप से विकास थाना अधीन सात राज्यों की जनजातियों की तरह चली है बाहर से विस्थापितों के प्रभाव में भूमि को लेकर अनेक प्रकार की जाती संघर्षों को जन्म दिया स्वतंत्र से लेकर उत्तर पूर्व भारत दो प्रमुख सशस्त्र संघर्षों के गवाह बन रहे हैं वह नाग नागिन के दीजिए समाजवादी परिषद द्वारा आयोजित आंध्र संघ के अखिल असम विद्यार्थी संघ द्वारा आयोजित आंदोलन असम आंदोलन इस संघर्षों से व्यवस्थित के सतत प्रवाह को उत्पन्न किया है सन 1990 के शुरुआती वर्षों में शुरू हुए बोलो और श्रद्धालुओं के संग कभी भी किसी न किसी रूप में चल रहे हैं जिससे विस्थापित हो रहे लोगों की संख्या 300000 से भी अधिक पहुंच गई भारत के विभिन्न भागों में हो रहे एकरूपता संबंधी प्रजातंत्र आंदोलनों और स्थानीय संघर्षों के कारण बहुत से लोग आंतरिक विस्थापन का शिकार हो रहे हैं।

अपने पर्यावरण और इलाके से बलपूर्वक प्लेन विस्थापन के नवीन एवं रजत रूप है यह प्राकृतिक संकट अनावृष्टि और विकास व आर्थिक कारणों से होने वाले सामाजिक परिवर्तनों का वर्तमान स्वरूप है जहां की बांध विद्युत शक्ति उत्पादन योजनाओं खदान और कारखानों के चलते बड़ी मात्रा में मार्वल राशि विस्थापित हो रही है

भारत में विकास योजनाओं से विस्थापित हुए लोगों की संख्या लगभग साडे तीन करोड़ है जो पूरे विश्व की तुलना में सबसे अधिक है ऐसे विस्थापित लोगों को पर्याप्त सरकारी सुविधा नहीं मिलने के कारण स्थाई रूप से गरीब था का शिकार रहते हैं जिसके कारण वे पूर्ण रूप से सामाजिक व राजनीतिक तौर पर हंसी क्लॉथ हो गए हैं।

क्रीम आर्थिक विकास प्राप्त करने के लिए भारत में औद्योगिक विकास योजनाओं सड़के खदानें विद्युत शक्ति उत्पादन केंद्र और में जय दादी की निर्माण में भारी मात्रा लगाएं ऐसी विकास योजनाओं के फल मिलने के लिए भूमिका बड़ी तादाद में अधिग्रहण जरूरी था जिसके कारण मानव राशि का विस्थापन हुआ। प्रथम राष्ट्र राज्य पद्धति के कारण विकास योजनाओं से प्रभावित मानव समूह को आकस्मिक बेदखली कम मुआवजा जीविका और संपत्ति की हानि पुनर्वास पर भेजो दलिता जैसे अभी सुकृत परिस्थितियों से गुजरना पड़ रहा है।

भारत विकास से होने वाले विस्थापन में प्रमुख स्थान बांध निर्माण से उत्पन्न विस्थापन का है पिछले 50 वर्षों में लगभग 3300 बांध निर्मित हुए और हजार के करीब निर्माण दिन है दुनिया भर के बांध निर्माताओं में तृतीय स्थान बात का है भारतीय विशेषज्ञों के अनुसार मात्र बांध निर्माण से विस्थापित लोगों

की संख्या दो से चार करोड़ के पीछे विस्थापन संबंधित संकटों के प्रमुख कारण होने के कारण तथा उससे संबंधित निर्माण हमेशा गंभीर प्रतिवादी का विषय रहा है।

भारत का टिहरी बांध जोकि दूंगा नदी के ऊपर तट पर निर्मित हुआ के कारण 100 गांवों को जल मानचित्र बनाकर 90 हजार के करीब परिवारों को विस्थापित कर दिया गया नरेंद्र घाटी विकास योजना के अंतर्गत नर्मदा और 419 सहायक नदियों के पुनर्निर्माण करने के लक्ष्य में बार मनाए 320 गुजरात के सरदार सरोवर मध्यप्रदेश की नर्मदा सागर किसके बीच आते हैं सन 1990 में निर्मित बरगी बांध नर्मदा नदी का प्रथम बांध है जिसने 162 गांव से 114000 लोगों को विस्थापित कर दिया अपने जो भूमि नष्ट हुई उसके लिए इन लोगों को कोई मुआवजा नहीं मिला और अपनी जीविका से बीवी बेदखल हो गए सरदार सरोवर बांध के निर्माण ने 200000 लोगों को विस्थापित किया नर्मदा नदी घाटी में 100 वर्ष की अवधि में 32 व बांध के निर्माण से संबंधित योजना मानवीय इतिहास की बड़ी निर्माण योजनाओं में से एक है इसमें सबसे विवादास्पद योजना है सरदार सरोव।

मानव अधिकार रक्षा संस्थान के अनुसार विस्थापन के कारण हानि सहने वालों में जनजातियां भारी मात्रा में शामिल है भारत की जनसंख्या में लगो आठ प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करने वाला यह मानव समुदाय विस्थापितों की कुल संख्या का सार प्रतिशत है इसलिए जनजातीय विस्थापितों की अवस्था विशेष चिंता का विषय है

भारतीय विस्थापन के परिप्रेक्ष्य में प्रवासी विस्थापन भारत विभाजन से उत्पन्न विस्थापन और विकास उत्पन्न विस्थापन महत्वपूर्ण है इस तरह विस्थापित हुए लोगों के बारे में विचार करने के लिए इन विस्थापन ओके इतिहास एवं स्थापित की समस्याओं पर पर्याप्त शोध अपरिहार्य है तभी विस्थापन की विभीषिका से उत्पन्न असंतोष का जड़ से सफाया संभव होगा

भारत में विस्थापितों की सहायता के लिए देसी योजना और न्याय संस्था संबंधी ढांचा अनुपलब्ध है साफ सुथरा नीति और देशीय कानूनी साधनों और संस्थानों की अनुपस्थिति में विस्थापन के पूर्व और बाद की परिस्थितियों से शांतिपूर्वक गुजरात बहुत दुष्कर है जब तक यह काम कठिन है इस समस्या का तत्काल समाधान एक सुदूर स्वप्न मात्र है।

संदर्भ पुस्तके –

1. विकास विस्थापन एवं पुनर्वास, राजू सिंह
2. विस्थापित परिवारों को समाजशास्त्रीय अध्ययन, डॉ अंकुर पारे
3. आदिवासी विकास से विस्थापन, रमणिका गुप्ता
4. विस्थापन का साहित्य विमर्श, अचला पांडे
5. भीष्म साहनी के उपन्यासों में विस्थापन का स्वरूप पीएचडी हेतु शोध कार्य, राजेंद्र प्रसाद ग्वाला शोधगंगा से